गुरुदेव जन्म-जयन्ती पर विशेष ह्न

पुण्य और पवित्रता के अद्भुत संगम

– डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, जयपुर

शुद्धता के साधक, प्रतिपादक पूज्य गुरुदेवश्री कानजी स्वामी इस युग के युगांतरकारी अलौकिक महापुरुष थे। उनके जीवनकाल में उनके सम्पर्क में जो भी आया, उनसे प्रभावित हुए बिना नहीं रहा। उनके अद्भुत व्यक्तित्व एवं अध्यात्मरस से ओत-प्रोत, गम्भीर किन्तु मधुरवाणी का आकर्षण सरल-हृदय आत्मार्थी बन्धुओं को चुम्बक की भाँति आकर्षित कर लेता था।

सर्वकल्याणकारिणी उनकी पावन भावना एवं 'भगवान आत्मा' 'प्रभु' आदि सम्मान युक्त कोमल सम्बोधनों से युक्त सर्वहितकारिणी हित-मित-प्रिय वाणी मुमुक्षु बंधुओं के मानस पर दिव्यध्वनि के समान प्रभाव डालती थी। उनकी दिव्यवाणी का मर्म समझनेवाले तो उन्हें सुनकर डोलते ही थे; जिनकी समझ में कुछ भी नहीं आता था, वे भी मन्त्र-मुग्ध की भाँति सुनते रहते थे तथा यह अनुभव करते थे कि भले ही अनभ्यास के कारण इनकी बात हमारी समझ में नहीं आती; तथापि इसमें दम है, सत्य का सौन्दर्य है, सबका हित सन्निहित है। उनकी अमृतवाणी में 'सत्यं शिवं सुन्दरम्' की झलक प्रत्येक श्रोता को प्रतिभासित होती थी।

शत्रु-मित्र के प्रति समभाव रखनेवाले पूज्य गुरुदेवश्री कानजी स्वामी के विरोधी भी उनके व्यक्तित्व एवं वाणी के जादू को स्वीकार करते थे। पुण्य और पवित्रता के अद्भुत संगम इस महामानव ने जिन-अध्यात्म जगत को बहुत गहराई से प्रभावित किया है।

शुद्धात्मद्रव्य के आश्रय से उत्पन्न आत्मिक पवित्रता एवं सभी जीव शुद्धात्मतत्त्व को प्राप्त करें – इस पावन भावना से उत्पन्न सातिशय पुण्य के धनी स्व. पूज्य गुरुदेवश्री कानजी स्वामी अपनी पहिचान के लिए कभी किसी के मुँहताज नहीं रहे। उनके आन्तरिक एवं बाह्य व्यक्तित्व की रेखाएँ इतनी स्पष्ट हैं कि उनमें मिलावट संभव नहीं है। उनके जीवन एवं प्रतिपादन की मूलभूत समझ समाज के अन्तिम व्यक्ति तक अनुप्राणित है; जिसे धूमिल कर पाना, बदल पाना; कठिन ही नहीं, असंभव है।

क्या कोई माई का लाल समाज के गले आज यह उतार सकता है कि 'कानजी स्वामी पर्यायों को अक्रमबद्ध मानते थे, पुण्य को मुक्ति का मार्ग बताते थे, एक द्रव्य को दूसरे द्रव्य का कर्त्ता-हर्त्ता कहा करते थे; अथवा आत्मा के आश्रय के बिना भी आत्महित हो सकता है – यह समझाया करते थे।'

भगवन्तों की गुलामी के भी विरुद्ध जीवनभर आवाज बुलन्द करनेवाले एवं प्रत्येक आत्मा की ही नहीं, परमाणु-परमाणु की स्वतन्त्रता का उद्घोष करनेवाले पूज्य गुरुदेवश्री कानजी स्वामी अपने सिद्धान्त प्रतिपादन से ही नहीं, जीवन से भी आज जन-जन की गहरी पकड में हैं।

वीतराग-विज्ञान

वीतराग-विज्ञान ही, तीन लोक में सार।
वीतराग-विज्ञान का , घर-घर होय प्रसार।।

वर्ष : 27 310 अंक : 10

श्री कान गुरु जाते रहे ?

ह्न डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

जिसने बताया जगत को क्रमबद्ध है सब परिणमन।
परद्रव्य से हैं पृथक पर हर द्रव्य अपने में मगन।।
स्वाधीन है प्रत्येक जन स्वाधीन है प्रत्येक कन।
गुरु कान का संदेश धर लो कान जग के भव्यजन।।1।।

जो एक शुद्ध सदा अरूपी आत्मगुण गाते रहे।
पर्याय से भी भिन्न जो निज द्रव्य समझाते रहे।।
गुण-भेद से भी भिन्न जो निज आत्मा ध्याते रहे।
वे भव्य-पंकज-भास्कर श्री कान गुरु जाते रहे।।2।।

उनका बताया तत्त्व जग में आज भी जब गूँजता।
गुरु-गर्जनायुत वदन मन में आज भी जब घूमता।।
प्रत्येक दिन वे आज तक जब स्वप्न में आते रहे।
तब कौन कहता इस हृदय से कान गुरु जाते रहे।।3।।

ह्न साभार, वीतराग-विज्ञान, नवम्बर-1984 से

छहढाला प्रवचन

अजीव और आस्रव के बारे में भूल

तन उपजत अपनी उपज जान, तन नशत आपको नाश मान।
रागादि प्रगट ये दुःखदैन, तिनही को सेवत गिनत चैन।।५।।

(सुप्रसिद्ध आध्यात्मिक विद्वान दौलतरामजीकृत छहढाला पर गुरुदेवश्री के प्रवचन पाठकों के लाभार्थ यहाँ प्रस्तुत किये जा रहे हैं।)

भाई ! राग में सुख मानने से तू चैतन्यस्वभाव को भुला बैठा; अपने मुक्तस्वरूप को खोकर तू बन्ध के कारण में फँस गया।

प्रश्न : क्या वीतरागी देव-गुरु-शास्त्र सम्बन्धी राग भी बन्ध का कारण है?

उत्तर : हाँ; भैया ! तुम यह सोचो तो सही कि जब तुम्हें केवलज्ञान व मोक्ष पाना होगा, तब क्या तुम उस राग को साथ में रखकर मोक्ष जावोगे या उसको छोड़कर मोक्ष जावोगे? राग को छोड़े बिना केवलज्ञान नहीं हो सकता; अतः यदि अभी से राग को छोड़नेयोग्य नहीं मानोगे और उसको हितरूप समझोगे तो उसको तुम छोड़ोगे कैसे? उस राग का निमित्त चाहे जो हो, भले साक्षात् वीतरागदेव उसके निमित्त हो; तो भी वह बन्ध का ही कारण है, वह मोक्ष का कारण नहीं हो जाता। शुभराग हो यह अलग बात है; परन्तु उसको मोक्ष का कारण मान लेने में तो राग के साथ मिथ्यात्व का सेवन आ जाता है ह्न यह बड़ा दोष है। हे जीव ! यदि राग दुःख है तो वह मोक्षसुख का कारण कैसे हो सकता है? सुख तो वीतराग-विज्ञान है और वही मोक्षसुख का कारण है। राग को जिसने मोक्ष का कारण माना, उसने आस्रव को आस्रवरूप न पहचाना, आस्रवरहित वीतरागी चैतन्यस्वभाव को भी न पहचाना, रागरहित मोक्ष के कारण संवर निर्जरा को भी उसने नहीं पहचाना ह्न इसप्रकार सभी तत्त्वों में उसकी गलती हुई।

राग में उपयोग को जोड़ना बन्धन और दुःख है। स्व-विषय/ शुद्ध आत्मा में उपयोग को जोड़ना मुक्ति और सुख है। राग में रक्त जीव कर्मों से बन्धता है और

वैराग्य को प्राप्त जीव कर्मों से छूटता है ह्न ऐसा सिद्धान्त है; अतः हे जीव ! शुभ-अशुभ दोनों राग से अपने उपयोग को भिन्न जानकर उनसे तू विरक्त हो; किसी भी राग के साथ उपयोग को एकमेक मत कर !

मूढ़ता से जीव को स्वर्ण/रुपये के ढेर में सुख दिखता है, परन्तु हे भाई ! वह तो जड़ का ढेर है; और उस तरफ का तेरा जो ममत्वभाव है, वह भी पाप का ढेर है; उसमें से सुख कैसे आयेगा? उसी तरह शुभराग में भी सुख नहीं है। उपयोग को अन्तर स्वभाव में लगाकर राग-द्वेषरहित हो, तभी तेरे को सुख होगा। रागादिभाव तेरे स्वभाव की चीज नहीं हैं, वे तो तुझे दुःख देनेवाले हैं ह्न ऐसा समझकर उनका सेवन छोड़ और राग से भिन्न अपने चैतन्यस्वरूप का सेवन कर ! इससे तेरा दुःख मिटेगा और सुख होगा; ह्न यही वीतरागी संतों का हितोपदेश है।

मिथ्यात्व के कारण तत्त्व की विपरीत श्रद्धा करके जीव दुःखी होता हुआ चार गति में भ्रमण कर रहा है; तत्त्व की श्रद्धा में उसकी क्या भूल होती है और सत्य तत्त्वस्वरूप कैसा है ह्न यह दिखाकर जीव की भूल छुड़ाते हैं। जीव-अजीव और आस्रव के संबंध में जीव की क्या भूल है यह दिखाया; अब बंध और संवरतत्त्व के संबंध में क्या भूल है ह्न यह कहते हैं :ह्न

(गाथा-६)

शुभ अशुभ बंध के फल मंझार, रति-अरति करै निजपद विसार।
आतमहित हेतु विराग-ज्ञान, ते लखैं आपको कष्टदान ।।६ ।।

अज्ञानी जीव अपना चेतनरूप जो निजपद है उसे भूलकर, शुभबंध अच्छा व अशुभबंध बुरा ह्न ऐसा मानता है, और उस शुभ-अशुभबंध के फल में राग-द्वेष करता है; शुभ-अशुभ दोनों बन्धन से रहित अपना शुद्धस्वरूप है उसको वह नहीं पहचानता और बंधभाव को अपना स्वरूप मानता है, ह्न यह बंधतत्त्व की भूल है।

तदुपरांत, आत्मा के हित के कारण ऐसे जो वीतरागता व सम्यग्ज्ञान हैं, उन्हें वह कष्टदायक समझता है। सम्यग्ज्ञान के साथ सम्यग्दर्शन भी होता ही है; अतः सम्यग्दर्शन-सम्यग्ज्ञान और रागरहित चारित्र ह्न ऐसा संवरभाव आत्मा को परम सुख

देनेवाला है, परन्तु अज्ञानी उसमें कष्ट समझता है; इसप्रकार संवरतत्त्व को भी वह नहीं पहचानता। अहा, रत्नत्रयरूप वीतराग-विज्ञान की साधना में कितना आनंद है? ह्न आत्मा का कैसा सुख है? उसको धर्मी ही जानते हैं।

चेतनमय निजपद को भूला हुआ अज्ञानी प्राणी क्या करता है ह्न उसकी बात चल रही है। आत्मा स्वयं चैतन्य निधान आनन्द का समुद्र है, उसके सामने देखते ही समभावी आनन्द की लहरें उठतीं हैं; परन्तु उसको भूलकर अज्ञानी राग-द्वेष पुण्य-पाप का सेवन कर रहा है। शुभ एवं अशुभ दोनों भाव बन्ध के ही कारण हैं, तो भी अज्ञानी शुभ को बन्धरूप न जानकर, उसको मोक्ष का कारण मानकर उनका सेवन करता है। सम्यग्दर्शन जो कि स्वयं परम आनन्दरूप है और मोक्ष का कारण है उसकी महत्ता अज्ञानी को नहीं दिखती और शुभराग की महत्ता दिखती है, इसकारण वह राग के फल में ही रचा-पचा रहता है; वीतरागी ज्ञान के अनुभव में जो आनन्द है, उसकी उसे खबर भी नहीं है। शास्त्रकार समझाते हैं कि हे भाई ! शुभ-अशुभ सभी आस्रव दुःख के ही कारण हैं; अतः उनका सेवन छोड़ो; और वीतरागविज्ञानरूप संवर ही सुख का कारण है, अतः उसका सेवन करो।

शुभ के फल में मुझे सुख और अशुभ के फल में मुझे दुःख, अनुकूलता आने पर मैं सुखी हो गया और प्रतिकूलता आने पर मैं दुःखी हो गया ह्न इसप्रकार शुभ-अशुभ में अज्ञानी अंतर-जुदाई देखते हैं, किन्तु वास्तव में वे दोनों ही दुःखरूप और बंधनरूप हैं, अपना सच्चा स्वरूप उन दोनों से अलग है ह्न उसे वह नहीं पहचानते। चेतनभाव और बंधभाव दोनों की जाति ही भिन्न है। ज्ञान-वैराग्यरूप जो अबन्धभाव हैं; वही सुख है। रागरूप जितने भी बन्धभाव हैं वे सबके सब दुःख ही हैं।

संवरधर्म कहो, सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र कहो या विराग ज्ञान अथवा वीतरागविज्ञान कहो, सो अबंधभाव है, वह आत्मा का महा आनंदरूप है, हितरूप है, किन्तु इसके स्थान में दैहिक कष्ट को अज्ञानी लोग चारित्र मानते हैं। अरे भाई, चारित्र में कष्ट नहीं है, वह तो महा आनन्दरूप जगपूज्य पद है। आत्मा का चारित्रधर्म देह की क्रिया में नहीं रहता, चारित्र राग में भी नहीं रहता, चारित्र तो चेतन में एकाग्रतारूप है, उसमें दुःख या कष्ट कैसा ? **(क्रमशः)**

नियमसार प्रवचन

काल द्रव्य का स्वरूप

परमपूज्य सर्वश्रेष्ठ दिगम्बराचार्य कुन्दकुन्द के प्रसिद्ध परमागम नियमसार की 31 वीं गाथा पर हुये आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के अध्यात्मरस गर्भित प्रवचनों का संक्षिप्त सार यहाँ दिया जा रहा है। गाथा मूलत: इसप्रकार है ह्न

समयावलिभेदेण दु दुवियप्पं अहव होइ तिवियप्पं।
तीदो संखेज्जावलिहदसंठाणप्पमाणं तु ।।३१।।

(हरिगीत)

समय आवलि भेद दो भूतादि तीन विकल्प हैं।
संस्थान से संख्यातगुण आवलि अतीत बखानिये।।३१।।

समय और आवलि के भेद से व्यवहारकाल के दो भेद हैं अथवा (भूत, वर्तमान और भविष्य के भेद से) तीन भेद हैं। अतीत काल (अतीत) संस्थानों के और संख्यात आवलि के गुणाकार जितना है।

(गतांग से आगे....)

ज्ञान काल के प्रमाण को निश्चित करता है, उस प्रमाण करनेवाले ज्ञान का समय एक है, किन्तु उस प्रमाण ज्ञान से आत्मा प्रमाण होता है। ऐसा निश्चित होते ही इस पर्याय का पर से भेद होकर स्व से एकत्व होना धर्म है।

अनंत गुणों का अखण्ड पिण्ड आत्मा है ह्न ऐसा एक समय की पर्याय में निर्णय हुआ तो पर्याय आत्मा जितनी दिखाई देती है। वह आत्मा के आधार से हुई ह्न ऐसा निश्चित होते ही निमित्त अथवा राग से पर्याय होती है, यह बात समाप्त हो जाती है। इसलिये एक समय की पर्याय पर्यायवान द्रव्य की है ह्न ऐसा निश्चित करना चाहिए।

यह द्रव्यानुयोग का अधिकार है। इस नियमसार में मोक्षमार्ग कैसे होता है ? ह्न वह बताते हैं।

नियम अर्थात् मोक्षमार्ग और सार अर्थात् व्यवहारादि से रहितपना ह्न ऐसा नियमसार है। निर्विकल्प दर्शन-ज्ञान-चारित्र मोक्षमार्ग है। कालद्रव्य के निश्चित होते ही आत्मा उसे जाननेवाला है ह्न यह निश्चित होता है अर्थात् इसे पर के समक्ष नहीं जाना पड़ता। उसीप्रकार पर्याय के निश्चित होते ही पर्यायवान दिखता है; पर्याय

नहीं, अतः पर्यायवान को जानने पर नियमसार और मोक्षमार्ग होता है। जिसप्रकार पर्याय पर्यायवान जितना है; उसीप्रकार गुण भी गुणी जितना है ह्न ऐसा निश्चय करें तो पर्याय द्रव्य की ओर झुके अर्थात् सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र, शुक्लध्यान हो और सर्वज्ञदशा प्रगट हो।

यह आत्मा स्व-पर को निश्चित करता है। आत्मा के अतिरिक्त कालादि द्रव्य स्वयं अथवा आत्मा को नहीं जानते। धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय लोकप्रमाण है और आकाश लोकालोक प्रमाण व्यापक है, आकाश की पर्याय भी लोकालोक व्यापक है। काल की पर्याय कालद्रव्य प्रमाण है। परमाणु की पर्याय परमाणु प्रमाण है। इन पाँच द्रव्यों का ज्ञान आत्मा करता है और ज्ञान की पर्याय आत्मा प्रमाण है। इसप्रकार पर्याय सिद्ध होते ही पर्यायवान द्रव्य सिद्ध होता है। द्रव्य को सिद्ध करे, वह द्रव्यानुयोग है; अतः यह कालादि का अधिकार तत्त्व का विषय है; गणित का विषय नहीं। अजीवतत्त्व हेय है, तथापि वह ज्ञेय करके हेय है। हेय का ज्ञान किए बिना यथार्थतापूर्वक हेय नहीं हो सकता। अतः कालद्रव्य को जानना हो तो जैसी पर्याय हो, वैसा जानना चाहिए। और आत्मा की खोज करना हो तो जहाँ आकुलता है, वहाँ भी सम्पूर्ण आत्मा है ह्न ऐसा निश्चित कर ह्न इससे विरुद्ध कोई कहनेवाला हो तो परीक्षा करके निर्णय करना चाहिए। दोनों ही सच्चे हो ह्न ऐसा नहीं है।

छठवें-सातवें गुणस्थान में झूलनेवाले संतमुनि है, उनको विकल्प उत्पन्न हुआ, अतः यह शास्त्र लिखा गया है। छठवें गुणस्थान में विकल्प होते हैं, सातवें में विकल्प नहीं होते। इसमें यह सिद्ध होता है कि जहाँ पर्याय है, वहाँ पर्यायवान है, इसलिए काल की पर्यायपूर्वक कालद्रव्य साबित होता है और जहाँ आकुलता की पर्याय है, वहाँ आत्मा सिद्ध होता है।

यहाँ एक समय को व्यवहारकाल कहा गया है और ऐसे असंख्य समयों का एक निमेष होता है अथवा आँख मिचें उतना काल वह निमेष है। आठ निमेष की एक काष्ठा, सोला काष्ठा की एक कला, बत्तीस कला की एक घड़ी, साठ घड़ी का एक अहोरात्र, तीस अहोरात्र का एक मास, दो मास का एक ऋतु, तीन ऋतुओं का एक अयन, दो अयनों का एक वर्ष होता है। इसीप्रकार आवली आदि व्यवहारकाल का क्रम है। इसप्रकार व्यवहारकाल समय और आवली के भेद से दो प्रकार का है अथवा अतीत, अनागत और वर्तमान के भेद से तीन प्रकार का है।

अब, अतीत काल का विस्तार कहा जाता है।

''अतीत सिद्धों के सिद्धपर्याय के प्रादुर्भाव से पूर्व बीता हुआ जो आवलि आदि

व्यवहारकाल वह, उन्हें संसारदशा में जितने संस्थान बीत गये उनके जितना होने से अनन्त है।''

सिद्ध भगवान के पूर्व में अनंत शरीर बीत गए, उन शरीरों से संख्यातगुणी आवलि भी बीत गई; इसप्रकार अतीत शरीर भी अनंत हैं और अतीत काल भी अनंत है। अतीत शरीर से अतीत आवलि संख्यातगुणी होने पर भी दोनों अनंत होने से दोनों को अनंतपने की अपेक्षा एक जैसा कहा है।

''अनागत सिद्धों की मुक्ति होने तक अनागतकाल भी अनागत सिद्धों के जो मुक्ति पर्यन्त अनागत शरीर उनके बराबर है।''

भविष्य का अंत नहीं है, परन्तु उतने काल का ज्ञान, ज्ञान में आ जाता है। अनंत काल बीते और अनंत काल बीतेंगे, वे ज्ञान में आ जाते हैं। तीन काल का ज्ञान तीन काल में निश्चित नहीं होता, किन्तु अल्पज्ञानवाला भी तीनकाल के ज्ञान को निश्चित करता है। तीनकाल को निश्चित करने के लिए, तीन काल का ज्ञान होना जरूरी हो तो तीन काल कभी निश्चित ही नहीं हो सकते; अत: अल्पज्ञान में यह निश्चित होता है कि आत्मा का स्वभाव तीन काल में जानने योग्य है और इसका निर्णय करनेवाली पर्याय पर्यायवान आत्मा से होती है।

यह अजीव अधिकार चल रहा है, इसमें काल द्रव्य की सिद्धि कर रहे हैं। कालद्रव्य को सर्वज्ञों ने देखा है, मुनियों ने कहा है और शास्त्रों में युक्तिपूर्वक सिद्ध किया गया है ह्न ऐसे व्यवहारकाल की बात करते हैं।

श्रीमद् भगवत्कुन्दकुन्दाचार्य पंचास्तिकाय गाथा २५ में कहते हैं कि समय, निमेष, काष्ठा, कला, घड़ी, दिन-रात, मास, ऋतु, अयन और वर्ष ह्न इसप्रकार काल पराश्रित है अर्थात् जिसमें पर की अपेक्षा आती है, वह व्यवहार काल है।

इस व्यवहार काल की बात करते हुए कहते हैं कि ह्न यह जीव अनंतकाल से स्वयं के चैतन्यस्वभाव को भूलकर पर्याय में संकुचित हो रहा है। आत्मा ज्ञान-दर्शनादि अनंत गुणों का पिण्ड है; किन्तु वर्तमान पर्याय में पर को अपना मानकर हीन पर्यायरूप परिणमन कर रहा है। जिसप्रकार हजार पंखुडियों का कमल हो उसकी कली संकुचित हो जाती है, किन्तु खिलने पर वैसा ही दिखाई देता है; उसीप्रकार आत्मा पर्याय में संकोच पाया हुआ है, वह आत्मा के त्रिकाल स्वभाव का अवलंबन पर्याय में केवलज्ञानपने करें तो खिल जावें। प्रथम, ज्ञान प्रतीति करें कि मेरा स्वभाव केवलज्ञानस्वरूपी है तो खिलें। जितने सिद्ध हुए हैं, वे आत्मा के कारण हुए हैं, बाहर से नहीं ह्न ऐसी प्रथम प्रतीति करें तो केवलज्ञानपने खिलता है। **(क्रमश:)**

ज्ञान गोष्ठी

सायंकालीन तत्त्वचर्चा के समय विभिन्न मुमुक्षुओं द्वारा
पूज्य स्वामीजी से पूछे गये प्रश्न और स्वामीजी द्वारा दिये गये उत्तर

प्रश्न : शास्त्रों में कहीं तो परीक्षाप्रधानी बनने के लिए कहा है और कहीं आज्ञानुसारी रहने का निर्देश दिया है। परीक्षा किये बिना निर्णय होता नहीं; अब हमें क्या करना?

उत्तर : परीक्षा तो करना, परन्तु जिन-आज्ञा को मुख्य रखकर करना। सर्वज्ञ की आज्ञा मानकर परीक्षा करना; अकेली परीक्षा करने जाओगे तो भ्रष्ट हो जाओगे। जिनशासन में कथित पदार्थों के स्वभाव की गम्भीरता, कालस्वभाव की गम्भीरता, अनन्त भावों के स्वभाव की गम्भीरता -इन सूक्ष्मस्वभावी पदार्थों को जिन-आज्ञा से प्रमाण करना।

अल्पबुद्धि का धारक जीव अकेली परीक्षा करने जायेगा तो जिनमत से च्युत हो जाने का बड़ा दोष होगा। जिन आज्ञा को मुख्य रखकर बने जितनी अर्थात जितनी हो सके, उतनी परीक्षा करने में दोष नहीं है। अकेली आज्ञा से ही माने और परीक्षा करे ही नहीं तो भी निर्णय सच्चा नहीं हो सकता और सच्चा निर्णय हुए बिना किसी अन्य के द्वारा की गई कुतर्कपूर्ण वार्ता सुनकर श्रद्धान बदल भी सकता है, इसलिए परीक्षा करके निर्णय तो अवश्य करना; परन्तु जिन-आज्ञा को मुख्य रखकर परीक्षा करना योग्य है।

प्रश्न : सभी शास्त्रों का सार स्वसन्मुख होना ही कहा है तो शास्त्रों को पढाने की क्या आवश्यकता? हमें तो स्वसन्मुख होने का ही प्रयत्न करना चाहिए।

उत्तर : स्वसन्मुख होने का ही प्रयत्न करना है; परन्तु जबतक स्वसन्मुख न हो पाता हो और अनेक प्रकार से अटक जाने की शल्य पड़ी हो, तब तक शास्त्र-वाँचन का विकल्प आता है, आये बिना रहता नहीं तथा शास्त्र भी तो स्वसन्मुख होने के लिए ही कहते हैं।

प्रश्न : बुद्धिपूर्वक तत्त्वाभ्यास करने पर भी किसी को सम्यग्दर्शन होता है, किसी को नहीं-ऐसा क्यों ?

उत्तर : जो जीव तत्त्वनिर्णय का यथार्थ अभ्यास करते हैं, उन्हें तो सम्यग्दर्शन होता ही है; किन्तु जो जीव तत्व का अभ्यास करने पर भी किसी स्थान पर अटक जाते हैं, उन्हें सम्यग्दर्शन नही होता। शास्त्रानुसार अभ्यास कर लेने पर भी अटकने के अनेक स्थान हैं, उनमें से कहीं भी अटक जाय तो सम्यग्दर्शन उत्पन्न नही होता। चढने का एक ही प्रकार है। जो रुचिपूर्वक सच्चा प्रयत्न करता है, उसके ढीले पड़ने की बात ही नहीं; उसका बल तो इतना प्रबल होता है कि सम्यग्दर्शन प्राप्त करके ही रहता है।

एक कथानक आता है कि एक बार अनेक जहाज समुद्र में डूब गए, केवल एक जहाज बच गया; तब किसी पुण्यवान ने कहा कि यह बचनेवाला जहाज ही मेरा है, मेरा जहाज डूब नहीं सकता। इसीप्रकार जो तिरनेवाले जीव हैं, उनमें मैं ही हूँ- ऐसा पात्र जीव को अन्दर से लगता है।

प्रश्न : तत्त्व का निर्णय करने में कितने वर्ष लगते होंगे?

उत्तर : कार्य हो जाय तो अन्तर्मुहूर्त्त में ही हो जाय, अन्यथा पूरा जीवन ही निर्णय करने में व्यतीत हो जाय। इसमें काल का कोई प्रश्न ही कहाँ है? वीर्य को विपरीत परिणमन से अवरुद्ध करके स्वरूपसन्मुख करे तो कार्य हुए बिना रहे नहीं। जितना कारण उपस्थित करना चाहिए; उतना जब तक नहीं जुटावे, तब तक कार्य सम्पन्न नहीं हो सकता।

सी. डी. एवं डी. वी. डी. पर विशेष छूट

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट जयपुर से डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के प्रवचनों की सी.डी और डी.वी.डी अब और आकर्षक रूप एवं कम कीमत में उपलब्ध ह्न

सी.डी. मात्र 20/- रुपये एवं डी.वी.डी. मात्र 25/- रुपये में

50 सी.डी. अथवा 50 डी. वी. डी. का एक साथ ऑर्डर देने पर 20 प्रतिशत की छूट भी दी जायेगी और साथ में पोस्टेज फ्री।

अब आप सी.डी और डी.वी.डी के ऑर्डर फोन पर भी बुक करा सकते हैं।

सम्पर्क ह्न अभिजीत पाटील, प्रवचन प्रसार विभाग, अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन, ए-4, बापूनगर, जयपुर, मो. 09887502410

समाचार दर्शन ह्न

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन उदयपुर द्वारा एक ऐतिहासिक कार्यक्रम ह्न

डॉ. भारिल्ल को विद्यावाचस्पति शिरोमणि सम्मान

उदयपुर : 6 अप्रैल, अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन के तत्त्वावधान में टाउन हॉल स्थित सुखाड़िया रंगमंच पर अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त तार्किक विद्वान डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल का **आधुनिक परिप्रेक्ष्य में : अहिंसा** विषय पर मार्मिक व्याख्यान हुआ।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि पूर्व गृहमंत्री माननीय श्री गुलाबचन्दजी कटारिया थे। अध्यक्षता समाजसेवी श्री ताराचन्दजी जैन ने की। विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री प्यारेलाल बोहरा, श्री शान्तिलाल टाया, श्री सुरेन्द्र संगावत, श्री शान्तिलाल अखावत मंचासीन थे। कार्यक्रम का शुभारम्भ गरिमा जैन एवं श्वेता जैन के नृत्यमयी मंगलाचरण से हुआ। स्वागत भाषण फैडरेशन के प्रदेश प्रभारी श्री जिनेन्द्र शास्त्री ने प्रस्तुत किया।

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल ने अपने व्याख्यान में आधुनिक परिप्रेक्ष्य में अहिंसा विषय को समझाते हुए कहा कि भगवान महावीर के जमाने में अहिंसा की जितनी आवश्यकता नहीं थी, उतनी आवश्यकता आज के जमाने में है। हिंसा से दोनों व्यक्तियों का, समाज का या लड़ने वाले देशों का नुकसान होता है। सम्पूर्ण जिनागम का सार बताते हुए भगवान महावीर ने आत्मा में रागादि की उत्पत्ति को हिंसा तथा उत्पत्ति नहीं होने को अहिंसा कहा है। सम्पूर्ण पाप कार्यों के पीछे जितना द्वेष का हाथ होता है, उससे ज्यादा राग की भूमिका होती है, इसलिए राग को भी हिंसा कहा गया है।

इस अवसर पर समस्त दिगम्बर एवं श्वेताम्बर समाज द्वारा डॉ. भारिल्ल का माल्यार्पण कर स्वागत किया गया तथा **विद्यावाचस्पति शिरोमणि** की उपाधि प्रदान करते हुये मेवाड़ी पाग, शॉल, तिलक आदि से सम्मान किया गया।

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल का परिचय फैडरेशन के प्रदेश उपाध्यक्ष डॉ. महावीरप्रसाद जैन ने दिया। सम्मान पत्र का वाचन महिला फैडरेशन की संयोजिका श्रीमती किरण जैन ने किया। विद्या वाचस्पति शिरोमणि से सम्मानित करने का प्रासंगिक कारण बताते हुये सुजानमलजी गदिया ने कहा कि डॉ. भारिल्ल के लगभग 35 शिष्यों ने पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त की है और लगभग 15 शिष्यों ने रजिस्ट्रेशन करा रखा है। इसके अलावा आपके ऊपर भी एक पीएच.डी. हो चुकी है तथा दूसरी पीएच.डी. का रजिस्ट्रेशन हो चुका है। आपके ऊपर कई शिष्यों ने अपने लघु शोधपत्र भी युनिवर्सिटी में प्रस्तुत किये हैं।

कार्यक्रम में दिगम्बर एवं श्वेताम्बर समुदाय के लगभग 1800 लोग उपस्थित थे। सभी अतिथियों का आभार प्रदर्शन फैडरेशन के जिला प्रभारी खेमचन्द जैन ने किया एवं संचालन आलोक पगारिया ने किया। समारोह में तपिश जैन, सुरेश भोरावत, शिल्पा जैन, भरत एम.संगावत, राजराजेश्वर जैन, नितिन गंगावत, मनोहर भोरावत आदि का उल्लेखनीय सहयोग रहा।

सम्पूर्ण कार्यक्रम डॉ. महावीरप्रसादजी जैन के निर्देशन में एवं जिनेन्द्र शास्त्री के संयोजन में सम्पन्न हुये।

- जिनेन्द्र शास्त्री (प्रदेश प्रभारी)

दीक्षांत समारोह सम्पन्न

ध्रुवधाम (बांसवाड़ा) : श्री ज्ञायक पारमार्थिक ट्रस्ट बांसवाड़ा द्वारा गुरूदेवश्री के प्रभावना योग में संस्थापित आचार्य अकलंकदेव जैन न्याय महाविद्यालय का प्रथम दीक्षांत समारोह रविवार, 5 अप्रैल को सम्पन्न हुआ।

समारोह के प्रथम सत्र में कुलाधिपति तत्त्ववेत्ता डॉ.हुकमचन्दजी भारिल्ल जयपुर के अतिरिक्त मुख्यअतिथि के रूप में श्री महेन्द्रजीत सिंह जनजाति विकास एवं तकनीकी शिक्षा मंत्री मौजूद थे। समारोह की अध्यक्षता श्री एन.के. मेहता बाँसवाड़ा ने की। विशिष्टातिथि श्री अर्जुनसिंह विधायक-बाँसवाड़ा, श्रीमति कान्ताजी विधायक-गढी, ब्र.श्री यशपालजी जैन, डॉ. महेश जैन, श्री शांतिलाल जैन आदि अनेक गणमान्य अतिथि मंचासीन थे। अतिथियों का स्वागत ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री महिपालजी ज्ञायक, महामंत्री श्री धनपालजी ज्ञायक एवं कोषाध्यक्ष श्री कन्हैयालालजी ने किया।

समारोह के प्रथम सत्र में कुलाधिपति डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल ने कहा कि शास्त्री शिक्षा आत्महितार्थ एवं अनंत भविष्य को सुधारने वाली शिक्षा है। अन्य मेडीकल, इंजीनियरिंग आदि शिक्षा सभी पापानुबंधी कार्य करानेवाली हैं, जबकि यह शिक्षा पारलौकिक जीवन को तो सुखमय करती ही है, साथ ही लोक में सम्मान व शांति के साथ-साथ यथायोग्य सम्पत्ति प्राप्त कराने में भी सहायक है। इस अवसर पर डॉ. भारिल्ल ने छात्रों को महाविद्यालय द्वारा **न्यायशास्त्री** की उपाधि प्रदान करने की घोषणा की।

समारोह के द्वितीय सत्र के अध्यक्ष श्री कांतिलाल बड़जात्या, मुख्यातिथि श्री ताराचन्द जैन उदयपुर, विशिष्टातिथि श्री राजकुमार अजमेरा रतलाम, श्री कोशिकभाई अहमदाबाद, श्री राजमलजी गोदड़ोद, श्री कचरुलाल मेहता उदयपुर, श्री ओमप्रकाश पारासह प्राचार्य शास्त्री महाविद्यालय गनोड़ा, डॉ.विद्यावती जैन प्राचार्य वरि.उपा. संस्कृत विद्यालय गनोड़ा थे। इस सत्र को ब्र.यशपालजी जैन ने अपने मार्मिक उद्बोधन से लाभान्वित किया।

डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल ने छात्रों को दीक्षा-शिक्षा देते हुए कहा कि आप सभी की वास्तविक परीक्षा समाज के बीच होगी। आप सभी सरलता, समन्वय व सहृदयता की भावना रखते हुए आत्मकल्याण की मुख्यता से तत्त्व प्रचार-प्रसार की भावना रखना। अपने चिन्तन को सदा ही सकारात्मक रखना। डॉ. साहब के शुभाशीष व मार्गदर्शन से छात्र बहुत प्रभावित हुए।

प्रशिक्षण शिविर में पहुँचने हेतु ...

दिनांक 13 मई से 29 मई 2009 तक कोलारस (म.प्र.) प्रशिक्षण शिविर में पहुँचने हेतु बस एवं रेल मार्ग निम्नानुसार है ह्न

बस मार्ग ह्न कोलारस झांसी से 110 कि.मी. वाया शिवपुरी, ग्वालियर से 120 कि.मी. तथा गुना से 40 कि.मी. के अन्तराल (आगरा-मुम्बई हाईवे/ए.बी.रोड) पर स्थित है। तीनों स्थानों से कोलारस के लिये बसें निरंतर उपलब्ध रहती हैं।

रेल मार्ग ह्न इन्दौर से इन्दौर-देहरादून एक्स.(4317) शनिवार एवं रविवार दोपहर 3 बजे, दिल्ली (ह.नि.) से देहरादून-इन्दौर एक्स. (4318) शुक्रवार एवं शनिवार दोपहर 1.30 बजे उपलब्ध है।

विस्तृत जानकारी के लिये रेलवे समय सारिणी देखें।

आर्ट ऑफ हैप्पी लिविंग सेमीनार सम्पन्न

मुम्बई : यहाँ दिनांक 12 अप्रैल 09 को जुहू जागृति सेन्टर में दिव्यध्वनि प्रचार-प्रसार ट्रस्ट द्वारा आर्ट ऑफ हैप्पी लिविंग सेमीनार आयोजित किया गया। डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के परामर्श एवं डॉ. शुद्धात्मप्रभाजी टड़ैया के निर्देशन में आयोजित यह सेमीनार जैन जीवनदर्शन की वैज्ञानिकता व उपयोगिता को युवा-युवतियों को समझाने का एक सुन्दर प्रयास रहा।

मंगलाचरण एवं अतिथियों के सम्मान के बाद प्रारंभ हुये इस कार्यक्रम में जैनधर्म के गूढ़ रहस्यों को काफी सरल एवं युवा वर्ग की भाषा में समझाया गया। विद्वत्रत्न डॉ. शुद्धात्मप्रभा टड़ैया ने क्या हम सुखी हैं या दु:खी है? इस विषय को अनेक उदाहरणों द्वारा रोचक शैली में समझाकर सिद्ध किया कि दु:खों के चक्र का अंत इच्छाओं पर अंकुश लगा कर ही किया जा सकता है। इस अवसर पर आपके द्वारा लिखित पुस्तक आगम प्रवेश भाग-2 व 3 का विमोचन भी किया गया।

युवा विद्वान पण्डित अनेकान्तजी भारिल्ल ने समझाया कि जैनदर्शन के सिद्धान्तों को सही रूप से समझकर ही हम वास्तविक जीवन को अनेक परेशानियों व तनाव से बचा सकते हैं। आपने बताया कि जैनधर्म के सिद्धान्त ही हमें सकारात्मक विचारों की ऊर्जा से भरते हैं, साथ ही कोमल व्यक्तित्व के निर्माण में सहायक भी होते हैं। अनेकान्त के सिद्धान्त के द्वारा ही हम लौकिक जीवन में भी बिना किसी बहस के साथ सभी के साथ तालमेल बिठाने में कामयाब हो सकते हैं।

प्रखर ओजस्वी वक्ता श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने अपनी विशिष्ट शैली द्वारा वस्तुस्वातंत्र्य, अकर्ताभाव जैसे अति कठिन समझे जानेवाले विषयों को भी सरल व रोचक ढंग से प्रस्तुत किया। आपने बताया कि इन भावों का फल क्या होगा का स्वर्णिम सूत्र जीवन में अपनाने से हम पाप बंध से बच सकेंगे एवं तनावमुक्त सार्थक जीवन जी सकेंगे।

अतिज्ञानवर्धक एवं रोचक इस सेमीनार में लोगों की शंकाओं का समाधान भी उपरोक्त सभी विद्वान वक्ताओं एवं विशिष्ट अतिथि कु.जिनल शाह द्वारा किया गया।

आचार्य धरसेन विद्यालय में प्रवेश पत्र भेजें

कोटा : आपको जानकर अति प्रसन्नता होगी तथा हमें सूचित करते हुए हर्ष का अनुभव हो रहा है कि मुमुक्षुओं की अग्रणीय, आध्यात्मिक, औद्योगिक एवं शिक्षा की काशी शैक्षणिक नगरी कोटा में छात्रों के उज्जवल एवं सर्वांगीण विकास हेतु संस्कारों से परिप्लावित आचार्य धरसेन दिगम्बर जैन सिद्धान्त विद्यालय का शुभारंभ पिछले वर्ष हो चुका है। उसी क्रम में जो छात्र इस संस्थान में प्रवेश पाना चाहते हैं वह 5 जून 2009 तक फार्म भरकर आवश्यक जानकारी के साथ भिजवाएं। प्रवेश इच्छुक छात्र **कोलारस (म.प्र.)** में होने वाले शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर में पधारकर प्रशिक्षण अवश्य ही ले; ताकि आपके चयन में सुविधा हो सके। 10 जून 2009 से 15 जून 2009 तक कोटा में होने वाले शिक्षण शिविर में अवश्य ही पधारें। यह शिविर केवल विद्यालय में प्रवेश के इच्छुक छात्रों के लिये ही होगा। शिविर पश्चात् साक्षात्कार होगा। साक्षात्कार में उत्तीर्ण होने पर ही प्रवेश दिया जायेगा।

सम्पर्क - आचार्य धरसेन विद्यालय, द्वारा बजाज पैलेस, नगरपरिषद कॉलनी छावनी,कोटा, (राज.) मो. नं. 09660625515 (विजयजी बोरालकर) 09828063891 (रतनचंदजी शास्त्री)

नवम वार्षिक महोत्सव सम्पन्न

जबलपुर : यहाँ श्री महावीरस्वामी दिगम्बर जैन मंदिर, बड़ा फुहारा में दिनांक 17 से 22 फरवरी, 09 तक पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव का नवम वार्षिक महोत्सव सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर श्री विद्यमान बीस तीर्थंकर विधान का आयोजन हुआ। जबलपुर में प्रथम बार आयोजित इस विधान का अर्थ पण्डित अभयकुमारजी जैनदर्शनाचार्य, देवलाली ने अपने मार्मिक व्याख्यानों में किया। रात्रि में आपके द्वारा रत्नकरण्डश्रावकाचार के भावना अधिकार से आर्तध्यान व रौद्रध्यान प्रकरण पर मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला।

विधि-विधान के समस्त कार्यक्रम पण्डित संजयजी शास्त्री अलीगढ ने सम्पन्न कराये। साथ ही आपके मोक्षमार्गप्रकाशक पर मार्मिक व्याख्यानों का लाभ मिला। दोपहर में पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर के समयसार पर मार्मिक व्याख्यान हुये।

विधान के आयोजनकर्ता श्रीमती भूरीबाईजी, जैन दिगम्बर एजेन्सी परिवार जबलपुर थे। सम्पूर्ण कार्यक्रम का संचालन अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन, जबलपुर शाखा ने किया।

26 वीं अखिल भारतीय जैन विद्या संगोष्ठी सम्पन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ जैन अनुशीलन केन्द्र, राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर एवं त्रिलोक उच्चस्तरीय अध्ययन एवं अनुसंधान संस्थान कोटा के संयुक्त तत्त्वावधान में दिनांक 22 से 24 मार्च, 09 तक श्री भट्टारकजी की नसियाँ में 26 वीं अखिल भारतीय जैन विद्या संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी का मुख्य विषय **भारतीय परम्परा में ध्यान एवं योग** था।

दिनांक 22 मार्च को प्रात: संगोष्ठी की अध्यक्षता राजस्थान विश्व विद्यालय के कुलपति श्री एन.के जैन ने की। मुख्यवक्ता डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल ने जैनदर्शन के आलोक में ध्यान की बहुत सुन्दर तार्किक मीमांसा की। मुख्यअतिथि के रूप में राजस्थान पत्रिका के सम्पादक श्री गुलाब कोठारी, विशिष्ट अतिथि के रूप में डॉ. टी. सी. कोठारी मंचासीन थे।

संगोष्ठी के निदेशक डॉ. पी. सी. जैन ने समागत अतिथियों का परिचय दिया तथा श्री राजकुमारजी काला ने सभी का हार्दिक अभिनन्दन एवं स्वागत किया।

त्रिदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के सात सत्रों में निम्नलिखित विद्वानों का लाभ प्राप्त हुआ ह्न

पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल जयपुर, डॉ. राजारामजी जैन आरा, डॉ. उदयचंदजी जैन उदयपुर, डॉ. पी.सी. जैन जयपुर, प्रो. लालचंदजी जैन, डॉ. प्रेमचंदजी रांवका, डॉ. बीना अग्रवाल, डॉ. अशोक जैन, पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, श्री धीरजजी जैन जोधपुर, डॉ. मंजूजी जैन, वैद्य प्रभुदयालजी कासलीवाल, श्री अखिलजी बंसल जयपुर, डॉ. राजकुमारी जैन अजमेर, डॉ. कल्पनाजी जैन नई दिल्ली, डॉ. निर्मलाजी गोदिका उदयपुर, डॉ. नन्दिता सिंघवी बीकानेर, डॉ. बी. एल. सेठी झुंझुनूं, श्री ताराचंदजी पाटनी, डॉ. शिवसागर त्रिपाठी आदि 71 विद्वानों ने अपने वक्तव्य के माध्यम से ध्यान एवं योग के विविध पहलुओं को सूक्ष्मता से प्रस्तुत किया।

संगोष्ठी में समागत सभी विद्वानों को पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट की ओर से डॉ. भारिल्ल की नवीनतम कृति **ध्यान का स्वरूप** एवं **प्रवचनसार की ज्ञान-ज्ञेय प्रबोधिनी टीका** भेंटकर सम्मानित किया गया। ●

ब्र. कंचनबेन नहीं रहीं...

सोनगढ निवासी (मूल निवासी-धांगधा) ब्र.कंचनबेन छोटालाल शाह का 82 वर्ष की आयु में सोनगढ में दिनांक 26 मार्च, 09 को शान्तपरिणामों पूर्वक देहावसान हो गया। गुरूदेवश्री से सर्वप्रथम ब्रह्मचर्यव्रत लेने वाली छह बहनों में एक आप भी थी। स्व. ब्र.सुशीलाबेन, स्व. ब्र. पुष्पाबेन आपकी बहिनें थी एवं श्री रजनीभाई, श्री हंसमुखभाई एवं स्व.श्री धीरेन्द्रभाई आपके भाई हैं।

आपने जीवन पर्यंत देव-शास्त्र-गुरू के प्रति अनन्य भक्ति व गहरी तत्त्वरुचि के साथ-साथ गुरूदेवश्री के सान्निध्य का भी भरपूर लाभ लिया था। देवलाली एवं पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, यहाँ के पदाधिकारी, विद्वान, कार्यकर्ता एवं छात्रों से आपको विशेष स्नेह था। यहाँ से होनेवाली सभी गतिविधियों की आप मुक्तकंठ से प्रशंसा करती थी।

आपकी स्मृति में कोलारस-शिविर में विधान हेतु 10,000/- रुपये प्रदान किये गये; एतदर्थ धन्यवाद ! दिवंगत आत्मा शीघ्र ही अभ्युदय को प्राप्त हो- यही भावना है।

पं. चैनसुखदास स्मृति व्याख्यानमाला

जयपुर (राज.) : जैनदर्शन के मर्मज्ञ मनीषी पं. चैनसुखदास स्मृति व्याख्यानमाला के अन्तर्गत श्री दिगम्बर जैन आचार्य संस्कृत महाविद्यालय जयपुर द्वारा दिनांक 25 जनवरी, 09 को कुन्दकुन्द सभागार भट्टारकजी की नसियां में विशेष व्याख्यान आयोजित हुये।

'सामाजिक सौहार्द्र समरसता एवं अनेकान्त दृष्टि' विषय पर मुख्य अतिथि प्रो. जुगलकिशोर मिश्र कुलपति जगद्गुरूरामानन्दाचार्य राज. संस्कृत विश्वविद्यालय, जयपुर एवं मुख्यवक्ता डॉ. वीरसागरजी जैन जैनदर्शन विभागाध्यक्ष श्री लालबहादुर शास्त्री संस्कृत विद्यापीठ नई दिल्ली ने विस्तार से विषय विवेचन किया।

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन का ह्न

30 वाँ राष्ट्रीय अधिवेशन कोलारस में

(रविवार, दिनांक 23 मई 2009)

अधिवेशन के पूर्व राष्ट्रीय कार्यकारिणी की मीटिंग 22 मई, 09 को प्रशिक्षण शिविर के अवसर पर कोलारस (म.प्र.) में आयोजित की गई है, जिसमें फैडरेशन द्वारा अभी तक किये गये कार्यों की समीक्षा एवं आगामी कार्यक्रमों की योजना पर विचार किया जायेगा।

अधिवेशन में सभी शाखाओं के अधिक से अधिक सदस्यों को उपस्थित होना है। शाखायें कम से कम 2 प्रतिनिधि अवश्य भेजें। अपने पहुँचने की पूर्व सूचना निम्न पतों पर देवें ह्न

केन्द्रीय कार्यालय ह्न अ.भा.जैन युवा फैडरेशन, ए-4, बापूनगर, जयपुर

कार्यक्रम स्थल ह्न श्री देवेन्द्रकुमार जैन, होटल फूलराज कम्पाउण्ड, कोलारस, जिला-शिवपुरी (म.प्र), मो.09425489646

शोक समाचार

1. **सोनगढ निवासी ब्र.चन्दूभाई खीमचन्द जोबालिया** का शांत परिणामों पूर्वक 86 वर्ष की उम्र में देहावसान हो गया। आप गुरूदेवश्री के अनन्य भक्त थे। आपने गुरुदेवश्री की अन्तिम समय तक सेवा का भरपूर लाभ लिया। आप सोनगढ में प्रतिदिन शास्त्र-स्वाध्याय, शिविरों में धार्मिक कक्षाएँ संचालित करते थे एवं सोनगढ ट्रस्ट द्वारा सम्पन्न होनेवाले पंच कल्याणकों के मुख्य प्रतिष्ठाचार्य थे। आप संस्कृत, प्राकृत भाषा के भी अच्छे विद्वान थे। जयपुर खानियां तत्त्वचर्चा में भी आपने पण्डित फूलचन्दजी सिद्धान्तशास्त्री के साथ महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया था।

2. **कोलारस-शिवपुरी (म.प्र.) निवासी श्री चिंतामणजी एडवोकेट** का 24 मार्च को शांतपरिणामों से देहावसान हो गया। आप सोनगढ एवं जयपुर में लगनेवाले शिविरों में आया करते थे। पं. टोडरमल स्मारक ट्रस्ट से चलनेवाली गतिविधियों में आपका हृदय से सहयोग रहता था।

3. **जयपुर निवासी** श्री प्रमोदजी जैन-जयपुर प्रिन्टर्सवालों की **मातुश्री** का दिनाँक 16 मार्च, 09 को शांतपरिणामों पूर्वक देहावसान हो गया। आप धार्मिक विचारों वाली महिला थीं।

4. **मुजफ्फरनगर निवासी श्री सुमेरचन्दजी जैन** (सम्पादक वर्णी प्रवचन) का दिनाँक 3 फरवरी, 09 को प्रात: 9 बजे समाधिमरण पूर्वकदेहविलय हो गया। आपने निधन के एक माह पूर्व अन्न जल का पूर्ण त्याग कर दिया था। आपने अपना पूरा जीवन जिनवाणी के प्रकाशन एवं प्रसार में ही लगाया। आपने अनेक ग्रंथों का प्रकाशन एवं सम्पादन किया। आप जीवन पर्यंत स्वाध्याय करते रहे। आपके जीवन पर श्री सहजानंदजी वर्णी महाराज का विशेष प्रभाव था।

5. **बाराबंकी निवासी श्री महावीरप्रसादजी दीवान** सीकरवालों का दिनाँक 10 मार्च, 09 को शांतपरिणामों पूर्वक देहावसान हो गया। आपकी धर्म में बहुत रुचि थी। आपकी स्मृति में जैनपथप्रदर्शक को 1000/-रुपये प्राप्त हुये हैं।

6. **पिपरा निवासी चौधरी ताराचन्दजी** का दिनांक 17 मार्च को पंचपरमेष्ठी का स्मरण करते हुए देह विलय हो गया। आप एक सदाचारी सहिष्णु धार्मिक विचारवाले सद्गृहस्थ थे। ज्ञातव्य है आप श्री टोडरमल महाविद्यालय स्नातक श्री प्रमोदजी शास्त्री दोसावालों के एवं पण्डित सुरेशचन्दजी टीकमगढ वालों के पिताश्री थे। आपकी स्मृति में टोडरमल स्मारक ट्रस्ट को 501/- रुपये प्राप्त हुये हैं।

दिवंगत आत्मायें शीघ्र ही अभ्युदय को प्राप्त हों ह्न यही भावना है।

पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री का विदेश कार्यक्रम

डॉ. भारिल्ल की तरह ही उनके शिष्य पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री, देवलाली भी कुछ वर्षों से धर्मप्रचारार्थ विदेश जा रहे हैं, उनका नगरवार कार्यक्रम निम्नानुसार है ह्न

16 जून से 22 जून - **वाशिंगटन**, 23 जून से 28 जून - **सान् फ्रांसिस्को**, 29 जून से 9 जुलाई - **लास एंजिल्स**, 10 से 15 जुलाई - **ह्यूस्टन**, 16 से 19 जुलाई - **न्यूयार्क**, 20 से 23 जुलाई **मियामी**, 24 से 26 जुलाई - **डलास**, 27 जुलाई से **शिकागो**।

आप उन्हीं स्थानों पर रुकेंगे, जहाँ डॉ. भारिल्ल रुकेंगे। अतिरिक्त स्थान ह्न ह्यूस्टन में भूपेश सेठ से 281-499-6894 नं. पर सम्पर्क कर सकते हैं।

डॉ. भारिल्ल का 2009 में विदेश कार्यक्रम

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी धर्मप्रचारार्थ विदेश जा रहे हैं। यह उनकी 27वीं विदेश यात्रा है। जिन भारतवासी बन्धुओं के परिवार या सम्बन्धी निम्नस्थानों पर रहते हों, वे उन्हें सूचित कर दें। उनकी सुविधा के लिए वहाँ के फोन, फैक्स एवं ई.मेल दिये जा रहे हैं, जहाँ डॉ. भारिल्ल ठहरेंगे।

उनका नगरवार कार्यक्रम निम्नानुसार है ह्न

क्र.	शहर	सम्पर्क-सूत्र	दिनांक
1.	लन्दन	**Bhimji Bhai Shah 192-384-0833** **bhimji@hevika.com**	29 मई से 4 जून
2.	न्यूयार्क	**Abhay Kantilal Kothari** **E-mail : u3a14@aol.com** **ukothari@verizon.net** **516-352-5588 (R) 212-398-7877 (O)**	5 से 7 जून
3.	वाशिंगटन डी.सी.	**Narendra Jain 703-319-2294** **E-mail : jainnarendra@hotmail**	8 से 14 जून
4.	मियामी	**Mahendra Shah (R) 305-595-3833** **(O) 305-371-2149** **E-mail : bhitap@bellsouth.net**	15 से 21 जून
5.	शिकागो	**Niranjan Shah (R) 847-330-1088** **Bipin Bhayani (O) 815-939-3190** **(R) 815-939-0056 (F) 815-939-3159**	22 से 28 जून
6.	लास एंजिल्स (शिविर)	**Atul Khara 469-831-2163** **Naresh Palkhiwala (R) 562-404-1729** **(O) 626-814-8425 ext.8725** **naresh.palkhiwala@westcov.org**	29 जून से 5 जुलाई
7.	सान् फ्रांसिस्को	**Vikas Jain 903-366-6524** **vikasnd@gmail.com** **Ashok Sethi (R) 408-517-0975** **ashok_k_sethi@yahoo.com**	6 से 12 जुलाई
8.	सान डियागो	**Sohum Sheth 858-679-0320 (H),** **858-342-0149 (M)**	13 से 19 जुलाई
9.	डलास	**Atul Khara 469-831-2163**	20 व 21 जुलाई
10.	मुम्बई	**E-Mail : parmatmb@yahoo.com**	22 जुलाई

फोटो और नाम का आग्रह उचित नहीं

सोनगढ़ में आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के सान्निध्य में अनेक वर्षों तक रहकर लाभ प्राप्त करनेवाली ब्र. भद्राबेन दिनांक 14-15 अप्रेल को श्री टोडरमल स्मारक भवन, जयपुर पधारीं। पूज्य गुरुदेवश्री के कुछ संस्मरण-अनुभव सुनाने के लिए आग्रह करने पर उन्होंने जो बताया; वह इसप्रकार है ह्न

पण्डित बाबूभाई मेहता के गृहनगर फतेपुर के पंचकल्याणक का एक प्रसंग है। उससमय प्रतिमा पर गुरुदेवश्री के नाम लिखने को लेकर विवाद खड़ा हुआ था। गुरुदेवश्री के अनन्य अनुयायी पण्डित बाबूभाई चाहते थे कि किसी भी कीमत पर गुरुदेवश्री का नाम लिखा जाना चाहिये और विरोधी लोग इस बात पर अड़े हुए थे कि किसी भी कीमत पर नाम नहीं लिखने देंगे। वहाँ मुमुक्षुओं के तो 5-7 घर ही थे और विरोधियों के 60-70 घर। वातावरण अत्यन्त उग्र हो गया था।

जब गुरुदेवश्री वहाँ पहुँचे और उन्होंने देखा कि पंचकल्याणक जैसा महान उत्सव और किसी के भी चेहरे पर उल्हास नहीं ह्न क्या बात है? जब उन्हें पता चला कि उनके नाम को लेकर विवाद चल रहा है ; तब उन्होंने बाबूभाई को बुलाकर कहा कि अरे नाम में क्या रखा है? यदि नाम के कारण इतना विवाद हो रहा है, सभी के मन में इतनी कषाय हो रही है तो क्यों नाम लिखाते हो? नाम लिखने से सामनेवाले तत्त्व सुनने भी नहीं आयेंगे। बेचारों को तत्त्वज्ञान से वंचित होना पड़ेगा। अपने को तत्त्वप्रचार को मुख्य रखना चाहिए न कि नाम को। अन्त में उन्होंने आदेश दिया कि नाम नहीं लिखाया जाय।

ऐसा ही एक प्रसंग और बना। कोटा में बाबू जुगलकिशोरजी 'युगल' जिस चैत्यालय में प्रवचन करते थे, वहाँ गुरुदेवश्री का एक बड़ा फोटो लगा हुआ था। उसे लेकर कोटा समाज में विवाद खड़ा हो गया और सारी समाज एकजुट होकर फोटो निकालने के लिए दबाव डालने लगी, आन्दोलन पर उतर आयी। युगलजी भी अड़ गये कि किसी भी कीमत पर फोटो नहीं उतारेंगे और वे अनशन पर बैठ गये।

उस समय सोनगढ़ में शिक्षण शिविर चल रहा था। वहाँ भी यह बात पहुँची, विवाद अधिक नहीं बढ़ जावे ह्न इसके लिए श्रीरामजी भाई दोशी ने श्री नेमीचन्दजी पाटनी व बाबूभाई को कोटा जाकर स्थिति को संभालने के लिए कहा। वे दोनों सोनगढ़ से निकलने के पहले पूज्य गुरुदेवश्री से मिलने गये; तो गुरुदेवश्री ने कहा कि युगलजी से कहना व्यर्थ विवाद न करें, यदि समाज फोटो रखना नहीं चाहती है तो फोटो उतार देवें, इसमें क्या रखा है?

कोटा पहुँचने पर जब दोनों ने गुरुदेवश्री का यह आशय युगलजी को बताया; तब युगलजी ने अत्यन्त भावविह्वल होकर कहा कि 'जो गुरु अपनी फोटो उतारने के लिए कहता है, वही सद्गुरु हो सकता है। जो गुरु विवाद के बावजूद अपनी फोटो लगवाना चाहता है, वह कैसे सद्गुरु हो सकता है? गुरुदेवश्री का उक्त आदेश पाकर मैं धन्य हो गया।'

अन्त में भद्राबेन ने कहा कि गुरुदेवश्री का तो यही अभिप्राय था, आदेश था कि फोटो और नाम का आग्रह रखकर तत्त्वप्रचार में अवरोध खड़ा करना उचित नहीं है। ●